57

# ''हे मेरे लोगो, उसमें से निकल आओ''

## ( 18:4, 5, 8, 10 )

अलग होने की पुकार ने छुटकारे के लिए परमेश्वर के कार्य के पूरे इतिहास में चुने हुओं को चिह्नित किया है। यहूदी कौम का आरम्भ अब्राम को ''अपने देश ... को छोड़कर उस देश में चला जा, जो मैं तुझे दिखाऊंगा'' की आज्ञा से हुआ था ([उत्पत्ति] 12:1)।[1]

''निकल आने'' की चुनौती पूरी बाइबल में मिलती है: स्वर्गदूतों ने लूत को अपने परिवार को इकट्ठा करके सदोम से भाग जाने के लिए कहा (उत्पत्ति 19:12, 13)। मूसा ने इस्राएलियों को आज्ञा दी कि कोरह और उसके साथी विद्राहियों के डेरों से निकल आओ और ''और उनकी कोई वस्तु न छुओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम भी उनके सब पापों में फंस कर मिट जाओ'' (गिनती 16:26)। यशायाह ने इस्राएलियों को आदेश दिया था, ''बाबुल में से निकल जाओ''; ''दूर हो, दूर, वहां से निकल जाओ, कोई अशुद्ध वस्तु मत छुओ'' (यशायाह 48:20; 52:11क)। यिर्मयाह ने यही बात कही: ''बाबुल में से भागो, अपना-अपना प्राण बचाओ! उसके अधर्म में भागी होकर तुम भी न मिट जाओ'' (यिर्मयाह 51:6क)। नये नियम में पौलुस ने अलग होने की पुकार की: ''इसलिए प्रभु कहता है कि उन के बीच में से निकलो और अलग रहो; और अशुद्ध वस्तु को मत छुओ, तो मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा'' (2 कुरिन्थियों 6:17)।

इसी प्रकार प्रकाशितवाक्य 18 में, स्वर्गदूत द्वारा बाबुल के विनाश का अनुमान लगाते हुए आदेश मिलता-जुलता था:

> फिर मैंने स्वर्ग से किसी और का शब्द सुना, ''कि हे मेरे लोगो, उस में से निकल आओ; कि तुम उसके पापों में भागी न हो, और उसकी विपत्तियों में से कोई तुम पर आ न पड़े। क्योंकि उसके पाप स्वर्ग तक पहुंच गए हैं, और उसके अधर्म परमेश्वर को स्मरण आए हैं'' (आयतें 4, 5)।

इन आयतों पर टिप्पणी करते हुए लियोन मौरिस ने लिखा है, ''परमेश्वर के लोगों को बुलाहट सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। ... एक अर्थ में यह अपील पूरे अध्याय की कुंजी है।''[2] इस आवश्यक चेतावनी को और अच्छी तरह से समझने में सहायत के लिए हम

इसके बारे में कई प्रश्न पूछेंगे।

## क्या?

पहली बात, ''निकल आओ'' की चुनौती में असल में आवश्यक क्या है? दिए गए कुछ उदाहरणों में, चुनौती मूल रूप में किसी विशेष जगह को छोड़ने की थी। (देखें उत्पत्ति 12:1, 4.) आम तौर पर परमेश्वर के लोगों के लिए आज्ञा उस जगह में से उन्हें उसके साथ नष्ट होने से बचाने के लिए निकल आने की थी। लूत के मामले में, उसके और उसके परिवार के न भागने पर उन्होंने सदोम और अमोरा के साथ भस्म हो जाना था (उत्पत्ति 19:12, 13)। कोरह और उसके साथी विद्रोहियों पर परमेश्वर का क्रोध भड़कने पर, उन षड्यंत्रकारियों के तम्बुओं में रह जाने वालों को पृथ्वी निगल गई थी (गिनती 16:23-34)।

इस प्रकार के ''निकल आने'' का नये नियम का उदाहरण यरूशलेम के बारे में अपने चेलों को कही यीशु की बातों में मिल सकता है: ''सो जब तुम उस उजाड़ने वाली घृणित वस्तु को जहां उचित नहीं वहां खड़ी देखो? (पढ़ने वाला समझ ले) तब जो यहूदिया में हों, वे पहाड़ों पर भाग जाएं'' (मरकुस 13:14)। इतिहासकार हमें बताते हैं कि यरूशलेम के गिरने के समय, मसीही यहूदी अपने नगर के साथ उजड़ने से बचने के लिए पेला में भाग गए थे।

इसलिए यह हो सकता है कि प्रकाशितवाक्य 18:4 वाली विनती में यह विचार हो कि मसीही लोग शारीरिक रूप से रोम नगर को छोड़कर चले जाएं। जब उन्हें लगा कि वे इसके साथ हार रहे हैं या उन्हें लगा कि नगर बर्बाद होने वाला है तो वे भाग गए।

परन्तु आमतौर पर ''निकल आने'' की आज्ञा का अर्थ स्थानीय लोगों के उलट प्रभाव से दूर रहना होता था। बाबुल से निकल आने की यशायाह और यिर्मयाह की विनतियों के मामले में ऐसी ही बात थी: जिन्हें बाबुल में ले जाया गया था, वहां उनकी जड़े मजबूत होने लगी थीं। वे मूर्तिपूजकों के रस्मो-रिवाज में भाग लेने लगे थे। उनके नियम फिसलते जा रहे थे; दुनियादारी पैर जमा रही थी; वे ''जीओ और जीने दो'' का नियम मानने को तैयार थे।[3] इस कारण नबियों ने उन्हें ''निकल आने'' की पुकार की, अन्य शब्दों में बाबुल के लोगों के साथ घुल-मिल जाने से बचने के लिए कहा।

2 कुरिन्थियों 6 में पौलुस ने इसी बात पर ज़ोर दिया। उसने कुरिन्थुस के मसीही लोगों से ऐसे समझौतों में फंसने से बचने का आग्रह किया जो उन्हें उसी जीवनशैली में ले जा सकते थे, जिसमें से वे निकल कर आए थे:

> अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न जुतो, क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल-जोल? या ज्योति और अन्धकार की क्या संगति? और मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव? या विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या नाता? और मूरतों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बन्ध? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर के मन्दिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है कि मैं उन में बसूंगा और उन में चला-फिरा करूंगा; और मैं उन का परमेश्वर हूंगा, और वे मेरे लोग होंगे। इसलिए

> प्रभु कहता है, कि उन के बीच में से निकलो और अलग रहो; और अशुद्ध वस्तु को मत छुओ, ... (2 कुरिन्थियों 6:14-17)।

प्रकाशितवाक्य 18:4 में भी मुख्य रूप से इसी बात पर ज़ोर दिया गया है: मसीही लोगों ने भावनात्मक रूप से, मनोवैज्ञानिक रूप से और आत्मिक रूप से ''बाबुल को छोड़ देना'' है। विलियम हैंड्रिक्सन ने कहा कि बाबुल से निकलने का अर्थ है ''उसके पापों के साथ सहभागिता न करना, उसके प्रलोभनों और बहकावों में न आना।''[4] विलियम बार्कले ने सुझाव दिया कि ''बाबुल को छोड़ देना'' शब्दों में ''मसीही व्यक्ति के संसार से आवश्यक अलगाव'' का वर्णन है।[5]

''संसार से अलग'' होने या ''संसार से दूर'' होने का अर्थ यह नहीं है कि हम अगले अंतरिक्ष यान में बैठ जाएं या किसी मठ में छिप जाएं। यीशु ने इस बात पर ज़ोर दिया कि उसके चेलों ने संसार *में* होना था, परन्तु ''संसार *के* नहीं'' (यूहन्ना 17:14-18)। इसके बजाय ''अलग'' होने का अर्थ है कि हम अपने मूल्यों तथा मानकों को निर्धारित करने के लिए संसार को अनुमति न दें। बार्कले ने टिप्पणी की है, ''यह संसार से निकल जाने की बात नहीं है; यह तो संसार के अन्दर ही अलग रहने की बात है।''[6] मैरिल सी. टैनी ने कहा है, ''परमेश्वर की पुकार का अर्थ यह नहीं है कि विश्वासियों को दूसरों से घमण्ड से भरे ढंग से लोगों से संगति नहीं करनी चाहिए, न ही यह कि उन्हें 'तुम से पवित्र' होने की सोच रखनी चाहिए। वह नहीं चाहता कि वे अपने आप को अलग दिखाएं।''[7]

नये नियम में यदि कोई बात स्पष्ट बताई गई है तो वह यह है कि मसीही लोग अलग और विलक्षण हों। प्रकाशितवाक्य सहित नये नियम में विश्वासियों के लिए सबसे पदनाम ''पवित्र लोग'' है,[8] जो पवित्र उद्देश्य के लिए ''अलग किए हुए'' का संकेत देता है।[9] यूनानी शब्द का अनुवाद ''कलीसिया'' संसार ''में से'' यीशु के साथ नये सम्बन्ध में ''बुलाए गए'' लोग हैं।[10] याकूब ने स्पष्ट लिखा है, ''... क्या तुम नहीं जानतीं, कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है? सो जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है'' (याकूब 4:4)। टैनी ने लिखा है:

> मसीही व्यक्ति गैर मसीहियों से अपनी रुचियों, उपव्यवसायों और लक्ष्यों में भिन्नता से पहचाना जाना चाहिए ...।
>
> ... संसार दास है, स्वामी नहीं; माहौल है, मानक नहीं, जिसके अनुसार हम चलें; शत्रु है, मित्र नहीं। मसीही व्यक्ति को संसार के आदर्शों और उपयोगों से मेल खाने की कोशिश करने के बजाय संसार के लिए गवाही बनने की इच्छा करनी चाहिए।[11]

पौलुस ने चुनौती दी, ''और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए'' (रोमियों 12:2क)।

हमें संसार के मूल्य प्रबन्ध, उसके मानकों और उसके दृष्टिकोण से ''बाहर निकल आना'' चाहिए। हमें ''बुरी संगति [से जो] अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है'' बचना चाहिए (1 कुरिन्थियों 15:33)। हमें इस संसार में पाई जाने वाली झूठी शिक्षा से ''बाहर आ जाना'' चाहिए (रोमियों 16:17, 18; 2 यूहन्ना 9-11)।

परन्तु इस बात को समझ लें कि ''बाहर आने'' की आज्ञा पूरी तरह से नकारात्मक नहीं है। हमें परमेश्वर *के पास* आने के लिए बाबुल *में से* ''*बाहर* आना'' है। (देखें यिर्मयाह 3:22.) मसीही लोग ''बाबुल के नहीं, बल्कि परमेश्वर के हैं। उन्हें अपने आप को झूठ के बजाय सच के सामने; शुद्धता के सामने झुकाना है, न कि बिगाड़ के सामने; परमेश्वर की इच्छा के सामने झुकाना है, न कि बेकार सुविधा के सामने।''[12] एक पुराने गीत की दूसरी आयत से हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा का पता चलता है:

व्यर्थ संसार के सोने के गोदाम की पूजा में से
हर उस मूर्ति से, जो यह कहते हुए कि
''ऐ मसीही मुझसे अधिक प्रेम कर''[13]
हमें अपनी ओर आकर्षित करती है,
यीशु हमें बुलाता है।

यदि हम ''उन के बीच में से निकलो और अलग रहो'' की प्रभु की आज्ञा की ओर ध्यान दें तो उसने प्रतिज्ञा की है कि ''तो मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा। और तुम्हारा पिता हूंगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियां होगे: यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का वचन है'' (2 कुरिन्थियों 6:17, 18)।

हर व्यक्ति को निर्णय लेना है कि वह बाबुल का वासी बनना चाहता है या स्वर्ग का नागरिक।[14]

## क्यों ?

दूसरा प्रश्न है कि ''यह इतना आवश्यक क्यों था कि यूहन्ना के पाठक 'बाबुल में से बाहर निकल आएं'?''[15] असंख्य कारण दिए जा सकते थे, परन्तु वचन में यहां दो ही कारण दिए गए हैं: पहला स्वर्गदूत ने उन्हें नगर को छोड़ जाने के लिए कहा, ''कि तुम उसके पापों में भागी न हो।'' हम मानने को तैयार हों या न, पाप में अपनी कशिश होती है। उस बड़ी वेश्या की बात करते हुए माइकल विल्कोक ने कहा कि हम उसके आकर्षण को कम आंकने का साहस नहीं करते:

> 17:4 के मोहित करने वाले सौंदर्य पर हम कंपकंपी से यह प्रतिक्रिया तो दे सकते हैं कि ''कितना नीच, कितना भड़कीला परन्तु घटिया है!'' क्योंकि हमें लगता है कि हमसे यही कहने की उम्मीद की जाती है। परन्तु व्यवहार में दैनिक जीवन में मोती और बैंजनी और सोने के कटोरे पर हम अत्यधिक मोहित होते हैं।[16]

यदि मैं और आप संसार के मधुर गायन की पुकार सुनकर उसमें फंसने के प्रलोभन में

आते हैं तो पहली शताब्दी के मसीही लोगों पर दोहरा प्रलोभन होगा। ''सताई जाने वाली कलीसिया को सांसारिकता से समझौता करके प्रतिकूल वातावरण में तनाव से मुक्त जीवन व्यतीत करने का सामना करना ही पड़ता है।''[17] मौरिस ने लिखा है, ''परमेश्वर के लोगों को इतना सताया गया कि उन्हें नगर से समझौता करने का अत्यधिक प्रलोभन झेलना पड़ा होगा, फिर न केवल उन्हें सताया जाना रुक गया, बल्कि नगर ने उन्हें धनवान बनाकर और सुविधा भी दे दी।''[18]

हो सकता है, बल्कि सम्भव भी है कि यूहन्ना के समय के कुछ मसीही लोग ''बाबुल की बुराइयों से समझौता करने को तैयार थे।''[19] यह अत्यधिक आवश्यक था कि उन्हें इसमें शामिल मुद्दों की समझ हो। एक तो यह था कि यदि वे बाबुल के पापों में सहभागिता करते हैं, तो वे परमेश्वर के लोग कहलाने का अधिकार खो देंगे। पौलुस ने कहा, ''और अन्धकार के निष्फल कामों में सहभागी न हो'' (इफिसियों 5:11क) और फिर यह कि ''दूसरों के पापों में भागी न होना'' (1 तीमुथियुस 5:22ख)।

बाबुल के पापों में भागीदार होने का एक और परिणाम था कि उन्होंने उसकी मृत्यु में भागीदार होना था: ''निकल आने'' का दूसरा कारण यह दिया गया कि ''उसकी विपत्तियों में से कोई तुम पर आ न पड़े।'' आयत 8 में इन विपत्तियों की रूपरेखा है: ''एक ही दिन में उस पर विपत्तियां आ पड़ेंगी, अर्थात मृत्यु, और शोक, और अकाल; और वह आग में भस्म कर दी जाएंगी।'' अध्याय 18 रोम के भविष्य के बारे में कोई संदेह नहीं रहने देता। उसने नष्ट हो जाना था। उसी अन्त से बचने के लिए, मसीही लोगों के लिए उसके कामुक मोह का विरोध करना आवश्यक था।

आज भी संसार नाशवान लगने वाले को चिरस्थाई बनाकर, संयोग लगने वाले को अनिवार्य बनाकर, और अश्लील लगने वाले को हानि रहित बनाकर अपनी ''माया'' दिखाता है। मेरे जीवन पर संसार का प्रभाव उससे अधिक है, जितना मैं स्वीकार करता हूं, यानी मैं पाप से उतना स्तब्ध नहीं होता, जितना पहले होता था; मैं पापियों को खुलकर चेतावनी नहीं देता; मैं ''चीज़ों'' से जुड़ा हुआ हूं। मेरे लिए याद रखना आवश्यक है और आपको भी याद रखना आवश्यक है कि जितना सुनिश्चित रोम का विनाश था उतना ही ''संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं'' (1 यूहन्ना 2:17)। प्रकाशितवाक्य 18 एक घोषणा करता है जिस पर हमें ध्यान देना आवश्यक है। हैंड्रिक्सन ने ज़ोर दिया था:

> ... सुख के पीछे पागल, अपनी सब कामुक विलासिताओं और सुखों से, अपने मसीही विरोधी दर्शन और संस्कृति से, परमेश्वर को भूल जाने वाला अक्खड़ संसार, और शरीर की अभिलाषाओं और मन की लालसाओं के अनुसार जीवन व्यतीत करने वाले लोगों की भीड़ नष्ट हो जाएगी।[20]

वचन में से मुझे यहां दोहरी चेतावनी देनी चाहिए, जो प्रकाशितवाक्य के पहले पाठकों को मिली चेतावनी की तरह ही पक्की है: यदि मुझे परमेश्वर का समर्थन नहीं है तो मुझे ''बाहर निकल कर अलग हो जाना'' चाहिए। यदि मैं परमेश्वर के क्रोध से बचना चाहता

हूं तो मुझे अपने आप को पाप के जाल में फंसने नहीं देना चाहिए।

इस चुनौती पर मनन करते हुए मैं भजन लिखने वाले के साथ पुकार भी सकता हूं, ''हे परमेश्वर, मुझ से दूर न रह; हे मेरे परमेश्वर, मेरी सहायता के लिए फुर्ती कर'' (भजन संहिता 71:12)।

## कौन?

तीसरा प्रश्न जो हम पूछते हैं वह है ''कौन?'' यानी यह अपील किसे की गई है? वचन में ''मेरे लोगो'' कहा गया है। अधिकतर लोग यह मानते हैं कि यह मुख्यतया मसीही लोगों के लिए है। मसीही लोगों को लिखते हुए पतरस ने कहा, ''तुम ... (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, ... तुम पहिले तो कुछ भी नहीं थे, पर अब परमेश्वर की प्रजा हो'' (1 पतरस 2:9, 10)।

एक समय था जब कई मसीही लोग रोम में रहते थे (रोमियों 16) और वहां वे ''कई वर्ष तक'' रहे थे (रोमियों 15:23)। निश्चय ही रोम का प्रभाव संसार में फैला होने के कारण ''निकल आओ'' का आदेश उस नगर के मसीही लोगों पर ही नहीं, बल्कि हर जगह रहने वाले लोगों पर लागू होता था।

''मेरे लोगो'' वाक्यांश का अर्थ रोम के उन लोगों के लिए भी लगाया जाता है, जो सुसमाचार सुनने के लिए तैयार थे, जैसा कि पौलुस ने कुरिन्थियों के बारे में कहा था, ''इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं'' (प्रेरितों 18:10)।[21] परमेश्वर जो लोगों के मनों को जानता है, उसे मालूम था कि कुरिन्थुस में ईमानदार और भले मन के लोग (लूका 8:15) हैं। इसलिए उसे पता था कि यदि वे वहां प्रचार करते रहते तो बहुत से लोग बचाए जा सकते थे। यह हो सकता है कि मनों को जांचने वाला (1 इतिहास 28:9) रोम में कुछ लोगों को जानता हो जिन तक पहुंचा जा सकता था और उन्हें निमन्त्रण के रूप में उसके वचन दिए जाने थे।[22]

जब मैंने इस व्याख्या को पहली बार पढ़ा तो मैं दुविधा में पड़ गया कि ये आयतें पवित्र लोगों और पापियों, दोनों के लिए दोहरा निमन्त्रण कैसे हो सकती हैं। फिर मेरे मन में और विचार आया: मैं ऐसा निमन्त्रण देता ही रहता हूं। अधिकतर प्रवचनों के अन्त में, मैं मसीही लोगों को भक्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करने (और आवश्यक होने पर प्रभु में लौट आने) के लिए प्रोत्साहित करता हूं। साथ ही मैं गैर-मसीहियों को विश्वास करके, मन फिराने और बपतिस्मे के द्वारा मसीही बनने के लिए प्रोत्साहित करता हूं (रोमियों 10:9, 10; मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:37, 38)। अन्य शब्दों में मैं मसीही और गैर-मसीही दोनों को संसार में से *''निकल आने''* और संसार से *बाहर रहने* का आग्रह करता हूं।

आप जो भी हों या आपकी आत्मिक स्थिति जो भी हो, प्रकाशितवाक्य 18:4 *आप* से ही बात करती है। परमेश्वर *आप* से ही कहता है, ''निकल आओ!''

## कब?

अन्तिम प्रश्न है, ''परमेश्वर ने उनके निकल आने के लिए *कब* इच्छा की?'' स्पष्ट उत्तर है, ''तुरन्त! अभी!''

तात्कालिकता का बोध अध्याय 18 में फैल जाता है। लियोन मौरिस ने सुझाव दिया कि प्रकाशितवाक्य के कम से कम पहली सदी के कुछ पाठक ''स्थिति की अनिवार्यता को नहीं समझते थे''[23] शायद वह सही है। विपत्तियां ''एक ही दिन में'' (आयत 8), ''घड़ी भर में'' (आयत 10) आने वाली थीं। विनाश के अचानक आ जाने पर तैयारी का समय नहीं होना था। तैयारी का समय ''अभी'' है।

''एक ही दिन'' और ''घड़ी भर'' शब्दों को अक्षरश: न लिया जाए क्योंकि इन शब्दों में रोम का आकस्मिक अन्त होने का संकेत है, परन्तु जीवन से परिचित लोगों को मालूम है कि त्रासदी कितनी तेज़ी से आ सकती है। क्या विनाश एक ही दिन में आता है? केन्द्रीय चीन के उन लोगों से पूछें जिनका प्रलय के कारण सब कुछ छिन गया था। क्या विनाश घड़ी भर में आ सकता है? समुद्र किनारे रहने वालों से पूछें जिनका सब कुछ हाल ही के तूफ़ान में नष्ट हो गया है। क्या विनाश एक मिनट में आ सकता है? उनसे पूछें जिनके मकान और जीवन भूकम्प आने से चरमरा गए। विपत्ति तो *एक पल* में भी आ सकती है। बहुत देर की बात नहीं है, स्थानीय समाचार पत्रों में एक त्रासदी का समाचार था: एक ट्रक ड्राइवर का ध्यान सिगरेट जलाने के लिए ''एक पल के लिए'' इधर-उधर हो गया, सड़क से उतर कर ट्रक किनारे पर खड़ी दो कारों में जा भिड़ा जिससे हाईवे के दो पेट्रोलमैन मारे गए।

आप जानते हैं कि यह सच है क्योंकि त्रासदी किसी भी समय और किसी भी जगह आ सकती है। ''तुम्हारा जीवन है ही क्या? तुम तो भाप ही हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है और फिर लोप हो जाती है'' (याकूब 4:14)। मैं यह आपको चेतावनी देने के लिए याद नहीं दिला रहा, बल्कि आपको अभी तैयारी करने का आग्रह करता हूं ''देखो, अभी वह प्रसन्न्ता का समय है; अभी वह उद्धार का दिन है'' (2 कुरिन्थियों 6:2)। ''यदि आज तुम उसका शब्द सुनो तो अपने मनों को कठोर न करो'' (इब्रानियों 4:7)। यदि आपने बपतिस्मा नहीं लिया है तो अभी ले लें। यदि आप परमेश्वर की भटकी हुई सन्तान हैं, और घर वापस आना चाहते हैं तो अभी आ जाएं। यदि आप तैयार हैं तो आप ''भविष्य पर मुस्कुरा'' सकेंगे। (देखें नीतिवचन 31:25.)।

## सारांश

उन्नीस सौ वर्ष पूर्व कही गई परमेश्वर की बातें आज भी वैसे ही प्रासंगिक हैं, जैसी कहे जाने के समय थीं ''हे मेरे लोगो, उसमें से निकल आओ कि तुम उसके पापों के भागी न हो और उसकी विपत्तियों में से कोई तुम पर आ न पड़े। क्योंकि उसके पापों का ढेर स्वर्ग तक पहुंच गया है'' (आयतें 4, 5क)। रोम ने पहली शताब्दी में मसीही लोगों को लुभाने की कोशिश की थी और संसार आज हमें लुभाने की कोशिश करता है। परमेश्वर हमारी सहायता करे कि हम में उस गीत की सोच हो, जिसमें कहा गया है:

पृथ्वी में ऐसा कोई भंडार नहीं, जो इस्तेमाल से नष्ट न हो,
वे जितने भी कीमती हों,
तो भी एक देश है, जहां मैं जा रहा हूं:
*स्वर्ग में मेरे लिए सब कुछ है।*[24]

---

टिप्पणियां

[1]रॉबर्ट माउंस, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 324. [2]लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो. संस्क., द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 210. [3]इस पद्य का अधिकतर भाग जिम मैक्गुइगन, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन, लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़* (लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनैशनल बिब्लिकल रिसोर्सिस, 1976), 266 से लिया गया है। [4]विलियम हैंड्रिक्सन, *मोर दैन कंकरर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1954), 208. [5]विलियम बार्कले, द *रैवलेशन ऑफ़ जॉन,* अंक 2, संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 152. [6]वही। [7]मैरिल सी. टैनी, *प्राक्लेमिंग द न्यू टैस्टामेंट: द बुक ऑफ रैवलेशन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1963), 93. [8]प्रकाशितवाक्य में ''पवित्र लोग'' पदनाम तेरह बार मिलता है। [9]''पवित्र लोग'' शब्द के सम्बन्ध में *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''मेमना योग्य है'' पाठ में इस शब्द को देखें। [10]''कलीसिया'' शब्द का अनुवाद यूनानी के मिश्रित शब्द *एक्कलेसिया* से हुआ है जो ''बाहर'' या ''में से'' (*ek*) के अर्थ वाले उपसर्ग के साथ ''बुलाना'' (*kaleo*) शब्द का मिश्रण है।

[11]टैनी, 91–92. [12]वही., 93. [13]सिसेल एफ. अलैक्जेंडर, ''जीज़स काल्स अस,'' *सौंग्स ऑफ़ फ़ेथ एंड प्रेज़,* संपा. एल्टन एव. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लॉ: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1996). [14]यह वाक्य वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे *द बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 616 द्वारा इस्तेमाल किए गए वाक्यांश पर आधारित था। [15]इस विनती की तुलना यिर्मयाह 51:6, 45 से करें। [16]माइकल विल्कोक, *आई सॉ हैवन ओपन्ड: द मैसेज ऑफ रैवलेशन,* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1975), 166. [17]माउंस, 324. [18]मौरिस, 209. [19]वही., 210. [20]हैंड्रिक्सन, 213.

[21]कई लेखक होशे 2:23 का हवाला भी देते हैं, जहां परमेश्वर ने कहा कि अन्यजातियां (''जो मेरे लोग नहीं थे'') एक दिन ''मेरे लोग'' कहलाएंगे। (यह रोमियों 9:25, 26 और 1 पतरस 2:9, 10 से लिया गया है।) [22]यह समझ आना चाहिए कि प्रेरितों 18:10 में परमेश्वर का अपने ''लोगों'' के हवाले का अर्थ यह नहीं था कि वे लोग बिना विश्वास किए और आज्ञा माने उद्धार पाएंगे। उद्धार पाने के लिए उन्हें अभी भी सुनना, विश्वास करना और बपतिस्मा लेना आवश्यक है (प्रेरितों 18:8)। इसी प्रकार यदि प्रकाशितवाक्य में ''मेरे लोगो'' शब्द में भावी मसीही है तो उन्हें भी उद्धार पाने से ग्रहण करना आवश्यक था। [23]मौरिस, 210. [24]टिलिट एच. टेड्डली, ''हैवन होल्ड्स ऑल टू मी,'' *सौंग्स ऑफ़ फेथ एंड प्रेज़,* संपा. अल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1996)।

## विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. परमेश्वर के लोगों को ''निकल आओ'' कहने के पाठ में दिए गए उदाहरणों पर विचार करें। क्या आप और उदाहरणों पर विचार कर सकते हैं?
2. क्या कई बार ''बाहर निकल आओ'' की आज्ञा का अर्थ यह होता था कि परमेश्वर के लोग किसी विशेष जगह से निकल जाएं? क्या इसका अर्थ हमेशा यही होता था?
3. 2 कुरिन्थियों 6:14-7:1 में हम में से हर किसी को दी गई चुनौती पर चर्चा करें।
4. पाठ में कई आयतें हैं, जो सिखाती हैं कि परमेश्वर के लोग अलग और विलक्षण हैं। क्या आप औरों का विचार कर सकते हैं?
5. क्या आप सहमत हैं कि संसार में आकर्षण है, एक विकृत आकर्षण, परन्तु है वह आकर्षण ही?
6. क्या यह पता होना कि ''संसार मिटता जाता है'' प्रलोभन से बचने में हमारी सहायता करता है?
7. क्या ''मेरे लोगो'' शब्द में केवल मसीही लोग ही हैं या इसमें मसीही बन सकने वाले लोग भी हो सकते हैं (जैसे प्रेरितों 18:10 में)?
8. सच्चाई का पता चल जाने पर हमें उसे कितनी जल्दी मान लेना चाहिए?
9. पाठ में सुझाव मिलता है कि हमें तुरन्त आज्ञा मान लेनी चाहिए क्योंकि त्रासदी किसी भी समय आ सकती है। आज्ञा मानने को न टालने के और क्या कारण हो सकते हैं?